Deg 2H
Paper 4
Module 2

S.S. Haider

Doctrine of Reciprocal Demand.

रिकार्डो का तुलनात्मक लागत सिद्धान्त विदेशी व्यापार में केवल पूर्ति पक्ष की बात करता है और माँग की दशाओं की पूरी तरह उपेक्षा करता है। रिकार्डो ने अपने सिद्धान्त में केवल गुणात्मक पक्ष को ही लेकर किया था और वे इसके परिमाणात्मक पक्ष को स्पष्ट नहीं कर सके थे। यह काम प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री जे. एस. मिल ने किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों का निर्धारण कैसे होता है और इसी सन्दर्भ में यह बताया कि दो देशों में वस्तु विनिमय की व्यापार शर्तों का निर्धारण अन्तर्राष्ट्रीय माँग के समीकरण द्वारा होता है। जिसे पारस्परिक माँग का सिद्धान्त भी कहते हैं। मिल के अनुसार दो देशों के बीच व्यापार की विनिमय दर केवल लागत या पूर्ति की दशाओं पर ही निर्भर नहीं रहती वरन् माँग की दशाओं का भी इस पर प्रभाव पड़ता है।

रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित तुलनात्मक लागत सिद्धान्त को संशोधित करते हुए प्रो० जे. एस. मिल ने एक निश्चित श्रम की मात्रा के लिए उत्पादन की मात्रा को दिये गये देश में भिन्न भिन्न मानकर दोनों देशों के मध्य विनिमय अनुपात निर्धारित करने का प्रयास किया है। इस प्रकार "मिल का प्रस्तुतीकरण तुलनात्मक लाभ या श्रम की कार्यक्षमता के रूप में है। जबकि रिकार्डो की व्याख्या श्रम लागत के रूप में है।

मान्यताएँ — मिल के पारस्परिक माँग सिद्धान्त कुछ मान्यताओं पर आधारित है जिसमें निम्नलिखित मुख्य हैं:—

(1) दो देश एवं दो वस्तु मॉडल के आधार पर मिल ने अपना सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।
(2) दोनों वस्तुओं का उत्पादन स्थिर प्रतिफलों के अन्तर्गत होता है।
(3) कोई परिवहन लागत नहीं होती
(4) दोनों देशों में स्वतंत्र व्यापार होता है
(5) दोनों देशों में पूर्ण प्रतियोगिता है
(6) दोनों देशों के बीच व्यापार सम्बन्ध तुलनात्मक लागत नियम से निर्धारित होते हैं।

एक उदाहरण द्वारा इसे हम अच्छी तरह से समझ सकते हैं

श्रम लागत	देश	उत्पादन (इकाई में)	
		शराब	कपड़ा
365 श्रम दिन	पुर्तगाल	200 m_1	150 m_2
365 श्रम दिन	इंगलैण्ड	100 m_3	120 m_4

इस तालिका से स्पष्ट है कि एक समान श्रम लागत से पुर्तगाल एवं इंगलैण्ड दोनों देश शराब एवं कपड़े की भिन्न भिन्न इकाईयों का उत्पादन करते हैं पुर्तगाल को शराब एवं कपड़े दोनों के उत्पादन में

निरपेक्ष लाभ प्राप्त होता है किन्तु शराब के उत्पादन में उसे तुलनात्मक रूप से अधिक लाभ प्राप्त होता है। इसके विपरीत इंगलैण्ड को दोनों ही वस्तुओं, शराब एवं कपड़े के उत्पादन में निरपेक्ष हानि होती है किन्तु कपड़े के उत्पादन में उसे तुलनात्मक रूप से कम हानि प्राप्त होती है। स्पष्ट है कि शराब का उत्पादन पुर्तगाल में इंगलैण्ड की तुलना में अधिक कुशलता से सम्भव है तथा कपड़े का उत्पादन इंगलैण्ड में अधिक तुलनात्मक कुशलता के साथ सम्भव है। इस प्रकार पुर्तगाल शराब के उत्पादन में पूर्ण विशिष्टीकरण करेगा जबकि इंगलैण्ड कपड़े के उत्पादन में पूर्ण विशिष्टीकरण करेगा।

विशिष्टीकरण के बाद दोनों देशों में विनिमय अनुपात क्या होगा? इसका उत्तर जे॰एस॰मिल ने देने का प्रयास किया है। प्रो॰मिल के अनुसार, विनिमय अनुपात की सम्भावित सीमाओं का निर्धारण क्रम की कुशलता द्वारा स्थापित घरेलू विनिमय अनुपात के आधार पर होगा। इस आधार पर विनिमय अनुपात की दो सीमाएं प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner